।। चाणक को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ चाणक को अंग लिखंते ||

|| चोपाई ||

ऋग जजु स्याम अथर्वण सोई || च्यारूं वेद कुवाय ||
मोख मुक्त की गेल बिचारी || पसू वे वेद दिखाया || १ ||

ऋगवेद,यजुर्वेद,शामदेव और अथर्ववेद ऐसे ये चार वेद है परन्तु जिसने मोक्ष के रास्ते का विचार किया उसने पशु के पास से(जैसे ज्ञानदेव ने भैसे के मुख से,गोरक्षनाथ ने मरे हुए कुत्ते से और शंकराचार्य ने गधे के गुदाघाट के रास्ते से),वेद का उच्चारण कराया। ||१||

श्रोता बक्ता पिंडत जोसी || भूल रहया जग माही ||
डाळ पान फूल फळ सेवे || गोड बिज गम नाही || २ ||

संसार मे श्रोता(सुननेवाले),वक्ता(उच्चारण करनेवाले)पंड़ित और जोशी ये सभी वेद में भूल रहे है । सभी लोग पेड़ की ड़ाल,पत्ते,फूल की सेवा कर रहे है परन्तु पेड़ के जड़ और बीज की किसी को भी जानकारी नही कि आदि मूल कौन है । ||२||

बाजी देख जक्त सब भूली || धन ले गांठ चढावे ||
जन सुखराम बुद्ध बिन मुरख || बादी नाव सरावे || ३ ||

जैसे जादूगर का खेल देखकर लोग भूल जाते है वैसे ही इस श्रृष्टी के कर्ता बाजीगर का खेल देखकर सभी भूल गये । जैसे पासका पैसा जादूगरको देते है,वैसे ही आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि बिना बुद्धि के मुर्ख है वे इस बाजीगर की शोभा करते है । जिस तरह उस बाजीगर की शोभा करते की खेल अच्छा किया इसी तरह इस श्रृष्टी की रचना करने वाले बाजीगर की शोभा करके उसका नाम भजते है । || ३ ||

कवत ||

पथर मुरत कोर || आण देवळ मे मेंली ||
वे भी पूजन जाय || कहे तुम व्हे ज्यो बेली || ४ ||

पत्थर की मूर्ती मनुष्य ने गढ़कर बनायी और खरीदकर लाकर स्वयं ही मंदिर में रख दी । और उस मूर्ती को खरीदकर मंदिर मे रखनेवाला ही उसे पूजने जाता और उस मुर्ती से कहता है कि तुम मेरी सहायता करो । || ४ ||

हाताँ लिवी बणाय || पूज नर नारी जावे ||
मकड़ी माँडे जाळ || ऊलट फिर माहे बंधाये || ५ ||

तो मनुष्य ने हाथसे पत्थर,धातु,चित्र,मिट्टीकी,रेत की,मनोमय,रत्न की,लकड़ी की आठ प्रकार से मुर्ती बनायी और वही स्त्री-पुरूष उस मुर्ती को पूजने के लिए जाते है । जैसे मकड़ी जाल बनाती है और उसी जाल मे वह फँस कर मरती है । वैसे ही यह मूर्ती पूजा का जाल अपने ही हाथो बनाकर स्वयं ही उसमे बांध कर अपने अमुल्य सांस गमा देते है ।) || ५ ||

यूं भरम्यो सेंसार || देव सब मांड ऊपाया ||

हाताँ क्रम कमाय ।। फेर भुक्तन कूं आया ।। ६ ।।

देव(ब्रम्हा,विष्णु,महादेव)इन्होने श्रृष्टी उत्पन्न की और इस समजमे संसार के सभी जीव भ्रमीत हो गये । जीव ने हाथो से ही कर्म किए और वे अपने हाथो ही किए गये कर्म भोगने के लिए संसार मे आये । जैसे मकड़ी स्वयं जाल बनाकर वह स्वयं ही उस जालमें फंसती है,वैसे ही जीव अपने किए हुए कर्मो मे बांधा जाता है । ।। ६ ।।

धरीया घड़ीया देव रे ।। सब अनघड़ बस होय ।।
छिन पल करे तो सिष्ट ।। भस्म चुरण सब कोय ।। ७ ।।

तो ये गढ़े हुए और रखे हुए देव ये सभी अनगढ़ देव के वश में याने स्वाधीन है,वह अनगढ़ देव इन सभी गढ़े हुए देवों का एक पल में चूरा करा सकता है मतलब सभी देवों का व श्रृष्टि का भस्म और चुर्ण कर सकता है । ।। ७ ।।

पल मे करे पेदास ।। छिनक मे सबे संघारे ।।
यूं घडीया सब घाट ।। सकळ अण घड़ के सारे ।। ८ ।।

वह अनगढ़ देव एक ही पल में सब पैदा करता है । ऐसे ही ये सभी गढ़े हुए घाट(आठ प्रकार की मूर्ती)उस अनगढ़ के काबू में हैं । ।। ८ ।।

सुर्गूण नाव अनंत ।। तांही गिणती नही जाणी ।।
ब्रम्ह एक निरधार ।। तांही की नही पिछाणी ।। ९ ।।

सगुण देवों के अनन्त नाम है उनकी गिनती किसी से भी नही होती । सतस्वरुप ब्रम्ह एक ही है परन्तु उसका निर्धार करके उसकी पहचान कोई नही करता है । ।। ९ ।।

देहे लगे साचा नाम ।। पूज सेवे तन सोई ।।
ब्रिछ बिना के छाँय ।। जड मुरख नर होई ।। १० ।।

यह देह है तब तक इस देह का नाम सच है । इस तन की याने शरीर की पूजा करके सेवा करना बराबर है परन्तु जब वृक्ष ही नही है तो उसकी छाया कहाँ से आयेगी । वैसे ही देह नही ,तब उसका नाम वृक्ष के बिना छाया के जैसा है । वैसे ही पत्थर की बनाई हुयी मरे हुए देवता की मुर्ती मुर्ख मनुष्य के लिए है । ।। १० ।।

गेणो भांज मिटावीयो ।। क्हा नाँव क्हे कोय ।।
देहे पड़याँ सुखराम के ।। सबे नाव इम होय ।। ११ ।।

गहना तोड़ कर गला ड़ाला,फिर गले हुये धातु को गहने का नाम कौन बतायेगा?उसी तरह यह शरीर खत्म हो जाने पर शरीर के सभी नाम तोड़े हुए गहने के जैसा है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।।११।।

दोहा ।।

गऊँ बछडयो मर रह्यो ।। कियो महुच्यो लोय ।।
ग्यान समज बिन बाहेरी ।। धूमर चाटे जोय ।। १२ ।।

गाय का बछड़ा मर गया,उस बछड़े के पुतले को(गाय का बछड़ा मर जाने पर वह गाय बछड़े के बिना दूध नही देती है । तब उस मरे हुए बछड़े की हड्डी,मांस निकाल कर,उसमे भूसा भरकर सिलाई कर देते है और वह गाय के आगे रखते है,वह गाय उसे अपना जिवीत बछड़ा समझ कर उसे चाटती है और दूध देने लगती है,यह पुतला बनाने की चाल मारवाड़ देश मे है । वहाँ नीच लोग घोंसी वगैरे जाती के लोग पुतला बनाते है),उस गाय को ज्ञान और समझ नही होने के कारण,वह गाय चाटती है,इसी तरह से ज्ञान और समझ जिनमे नही है,वे मनुष्य मरे हुए देवों के या संतो के,जैसे वह गाय अपना बछड़ा जिवीत है,ऐसा समझती है,वैसे ही ये देवों के और संतो के बाद मे गाय के पुतले जैसे करते है । ।। १२ ।।

बाळक केता संग रमे ।। करे जक्त को ख्याल ।।
खान पान सब बिसरे ।। रम क्या हूवे न्याल ।। १३ ।।

जैसे बच्चे(लड़के लड़की)साथ खेल कर,संसार के सभी खेल करते हैं ।(जैसे खेती करते,घर बनाते,शादी करते । उस गुड़िया से खेलते वगैरे सभी खेल करते है),इस खेल मे खाना-पीना सभी भूल जाते है परन्तु खेलकर निहाल होते क्या?उन्होने खेती किया,उसकी फसल कोई आती नही,घर बनाये,वह रहने के उपयोग मे नही आता,शादी करते तो औरत घर आती नही और बच्चे भी कुछ नही होते है,वैसे ही ये सभी छोटे बच्चों के जैसे संसार मे बड़े मनुष्य भक्ती करते हैं । वह बच्चों के खेल जैसे करते है । ।। १३ ।।

काठ पुतळी मांड कर ।। नार संग ले सोय ।।
सुर्गुण ईम सुखरामजी ।। तामे फेर न कोय ।। १४ ।।

तो सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जिस मनुष्य को स्त्री नही होगी वह लकड़ी का पुतला बनाकर उसे गहने पहनाकर अपने साथ लेकर सोया तो वह औरत का काम देगी क्या वैसे ही ये सगुण मुर्ती,मोक्ष देनेका काम नही कर सकती है इसमे कोई फरक नही है । ।।१४।।

कवित ।।

छुछम बेद बिन भेद ।। गत पिंडत नही होई ।।
चाल हाल नर नार ।। ग्यान सब ही को ओई ।।१५।।

इस सुक्ष्म वेद के भेद बिना,अरे पंड़ित गती नही होगी । सभी स्त्री पुरुषोकी की गती न होनेका ही हालचाल है । सभी स्त्री-पुरूष को गती न होनेका ज्ञान है ।।१५।।

हिल मिल रहे हिजूर ।। ओर न्यारी नही सूझे ।।
प्रदेसी की बात ।। आण प्रदेसी बुझे ।।१६।।

सभी हिल-मिलकर पंड़ित के ज्ञान में सम्मुख रहते हैं । उन्हे पंड़ित के ज्ञान के अलावा

दूसरा कुछ भी नही दिखाई देता है । दूसरे देशवाले की बात सुनकर परदेसी पूछता है ।।१६।।

क्हा क्हे ऊण देस की ।। सुख संपत वो आंय ।।
पिडंत संग सुखरामजी ।। रहयो जक्त ऊळ झाय ।। १७ ।।

तो वह उस देश की बात जीसे मालुम नही,उस देश का सुख और सम्पत्ती वह कैसे बतायेगा । जिस देश के पंड़ित को बात मालुम नही है फिर उस देश की बात पंड़ित कैसे बतायेगा?) इस पंड़ित के साथ सारा जगत उलझ रहा है । माला की दुकान पर हिरे का चाहनेवाला उलझ कर रहता है,परन्तु हीरा कुछ वहाँ मिलता नही इसीतरह से पंड़ितो की संगती मे मोक्ष नही है । ।। १७ ।।

दालद्री ढिग जाय ।। आण निर्धन घर कीया ।।
नार उधारे जाय ।। क्हा धन काडर दीया ।। १८ ।।

जैसे दरीद्र के नजदीक जाकर निर्धन ने घर बनाया और उस निर्धन की पत्नी उधार मांगने के लिए गयी तो वह दरीद्री उसे धन निकाल कर कहाँ से देगा?इसी तरह पंड़ित के पास संसार के लोगों की बुद्धि मोक्ष की चाहना करती है परन्तु उसके पास मोक्ष नही है तो वह मोक्ष कहाँ देगा,मोक्ष तो संतो के पास रहता है ।) ।। १८ ।।

अंधे अंधो लार ।। पंग पंगे संग होई ।।
त्रिया म्हेरी संग ।। काज अेको नही कोई ।। १९ ।।

अंधा मनुष्य अन्धे के संग या पंगू मनुष्य पंगू के संग जानेसे क्या सुख पाता । वैसेही स्त्री ने स्त्री के साथ शादी,की तो उस स्त्री का एक भी सुख का काम नही होता है । वैसे ही जीव और ब्रम्ह का समझो । ।। १९ ।।

सपना मे संपत मिले ।। राज पाठ सुख धाम ।।
निर्गुण बिन सुखराम के ।। यूं सुर्गुण बे काम ।। २० ।।

स्वप्न मे बहुत सी सम्पती मिल गयी,राजगद्दी मिल गयी,सुख मिल गये,मकान मिल गये परंतु सपना तुट्तेही सब सुख चले जाते ऐसे ही निर्गुण के बिना सगुण भक्ती स्वप्ने की संपत्ती के जैसे कोई काम मे नही आती है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।।२०।।

सुर्गुण देही जाण ।। झुट साची नही कोई ।।
जन सुखियां देहे जाय ।। नाम साचो किम होई ।। २१ ।।

सगुण यह देह है,वह मरता है इसलिये झूठ है सत्य नही है याने अमरलोकके न मरनेवाले अमर देह सरीखा नही है । यह देह जायेगा,तब देह का नाम भी जायेगा तब देह का नाम सत्य कैसे होगा ? ।। २१ ।।

छुछम बेद सुण भेद ।। जाण देवत नही पाया ।।

कव पंडीत पच जाय || भेद का मरम न आया || २२ ||

सुक्ष्म वेद का भेद देवता याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती,इन्द्र आदि देवो कों भी मिला नही फिर कवी(शुक्राचार्य)पंड़ित ये पच-पच कर थक जाते शरीर छोड देते तो भी इसका मर्म किसी को भी(कवी व पंड़ित को)नही मिलता । || २२ ||

डाळा पान गंभीर || पेड़ फळ फूल बखाणे ||
ईण सब ही का मूळ || ताही गत बिरळा जाणे || २३ ||

ये सभी पेड़ की ड़ालें,पत्ते,अगाऱ्या पेड़(टहनिया,तना),फल,फूल इनका वखाण करते है । परन्तु डाले,पत्ते,टहनियाँ,तने,फल,फूल वगैरे इन सभी के जड़ की गती ये कोई नही जानते । इस जड़ की गती कोई बिरला ही जानता । || २३ ||

भ्रम्यो सो सेंसार हे || च्यार बेद के माय ||
छुछम बेद सुखराम के || पिंडत कूं गम नाय || २४ ||

चारो वेदो के जाल में सभी जगत भ्रमीत याने भूला हुआ है । इस सूक्ष्म वेद की जानकारी पंड़ित को भी नही है । || २४ ||

दोहा ||

राजा रंक सुलतान सब || बंध्या बेद मुख माय ||
काजी मूल्ला बादस्या || आलम दुनि बंधाय || २५ ||

राजा और रंक तथा सुल्तान ये सभी वेद के जाल मे याने फास में बंधे हुए है । काजी क्या, मुल्ला क्या,बादशाह क्या सारा आलम क्या और दुनिया क्या ये सभी वेद मे बांधे गये है । ||२५||

तीन लोक चवदा भवन || ज्हाँ तहाँ हुवे बखाण ||
पवन पाणी धरतरी || बंधी बेद प्रवाण || २६ ||

तीन लोको में और चौदह भुवनो मे वेद का जहाँ तहाँ बखाण होते रहती है । यह पवन(हवा)व पानी और धरतरी ये सभी वेद के प्रमाण से बांधे हुए हैं । || २६ ||

तीन लोक देख्या सही || अरथ निगम पढ जोय ||
पिंडत कूं सुखराम के || छुछम बेद क्हो मोय || २७ ||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज पंड़ितो को कहते है कि पंड़ितो तुम वेद सीख कर वेद के अर्थ में तीनो लोक देख लिए । हे पंड़ितो तुम मुझे सुक्ष्म वेद क्या है यह बताओ । ||२७||

कवत ||

छुछम बेद बिन जाण || आण बोले सब बाणी ||
कूटे सबे पराळ || कूप सींचे बिन पाणी || २८ ||

इस सुक्ष्म वेद के अलावा दूसरे सभी जो मुख से बोलते हैं वे भूसा(अन्न निकाला हुआ

कुटार) के समान है । कुटार कूटने से उसमे से अनाज निकलेगा क्या?तथा जैसे सूखे कुँए से पानी निकालने जैसा है सुक्ष्म वेद के बिना दूसरे सभी है । ।।२८।।

दूले बिना बरात ।। बिज नाकूँ बिन बायो ।।
कँवळ कूख बिन नार ।। ब्याव प्रणे घर लायो ।। २९ ।।

दुल्हे के बिना बाराती जैसे होते व बिना नाक का बीज खेंत में बोने जैसा होता है । वैसेही सुक्ष्म बेद के बिना दुसरे सभी वेद है । जैसे पुरूषों मे हिजड़े होते है वैसे ही स्त्रीयों मे भी हिजड़े होते है उस हिजड़े से शादी कर उससे घर लानेसे लानेवाले गृहस्थ को पुत्रलाभ होनेका सुख मिलता नही । ।।२९।।

गोळी बिना आवाज ।। तुपक ब्हो सोर ऊडावे ।।
जन सुखिया बिन भेद ।। पिंडत बक जनम गमावे ।। ३० ।।

बंदूकमे गोली न ड़ालकर केवल बारूद डालके शोर कर दिया तो उससे कोई शिकार मरता नही । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ऐसे ही ये पंड़ित लोग सुक्ष्म वेद के भेद के बिना बकवास करके,कथा कहके पंड़ितो इस बकवास से कोई भी मोक्ष मे जाता नही और वाद विवाद करके अपना और दूसरों का जन्म गवाँ देते है । ।।३०।।

छुछम वेद को नाव ।। भेद कोऊं आण सुणावे ।।
बिन दिपक बिन तेल ।। जोत पर जोत जगावे ।। ३१ ।।

इस सूक्ष्म वेद के नाम का भेद कोई मुझे आकर बतायेगा तो वह दीपक के बिना और तेल के बिना ज्योती के उपर ज्योती जागृत करेगा ऐसा समजो । ।। ३१ ।।

नदीयां बहे सपूर ।। जोर सिलता ब्हो भारी ।।
हिल मिल अेके होय ।। घाट सो कहो बिचारी ।।३२।।

नदी की बाढ़ बहुत जोर से बह रही है वह नदी बडे नदी को मिलनेसे बड़ी नदी को बहुत भारी जोर आ जाता है । उस बडे नदीमे सभी नदीयाँ हिल-मिल कर एक हो जाती है उन घाटों का याने पुर का विचार करके बताओ ।।३२।।

पाँचू परखे नाय ।। बेण बायक नही जावे ।।
जन सुखिया वा जाग ।। जोय कोई मोय सुणावे ।। ३३ ।।

पाँचो इन्द्रियाँ परीक्षा नही कर सकती है और वहाँ वचन वाक्य नही जा सकता है आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि वह जगह देखकर मुझे बताओ?।।३३।।

दोहा ।।

वा जागा अेसी कही ।। निर्भे भे नही कोय ।।
कयाँ सुण्या माने नही ।। देख्यां ही सुख होय ।। ३४ ।।

वह जगह ऐसी बताई है कि वह जगह निर्भय है,वहाँ भय किसी का भी नही । वहाँ की बात बताने पर कोई सुनकर नही मानेगा । वह जगह तो देखने पर ही सुख होगा। ।।३४।।

कवत ।।

जक्त भेष पिंडत सबे || किणी पार ना पाया ||
अेसा अनघड देव तज || धरीये संग आया ||३५||

जगत व भेष(साधू ,वैरागी व पंड़ित)किसी को भी उस जगह का पार नही मिला । ये जगत, साधू,पंड़ित,वैरागी अनगढ़ देव छोड़कर देह धारण करके आये हुए अवतार को भजते हैं। ।३५।

देहे धर जुग औतार || ब्रम्ह वे अगम बतावे ||
ब्रम्हा बिस्न महेष || सेंस जाँकू नित गावे || ३६ ||

रामचन्द्र कृष्णदिक ये देह धारण करके संसारमे आते है और सतस्वरुप ब्रम्ह तो वह अगम है। उस अगम ब्रम्ह को ब्रम्हा,विष्णु,महेश और शेष नित्य भजते है || ३६ ||

निर्गुण ब्रम्ह विचार || जोय तेरे घट माई ||
ज्हाँ तहाँ करे सहाय || ग्यान कहे आद गुसाई || ३७ ||

उस निर्गुण ब्रम्ह का विचार किया तो वह तुम्हारे शरीरमे ही है,उसे इस शरीर मे ही देखो। वह जहाँ–तहाँ तुम्हे सहायता करता है,ज्ञान बताता है । वह आदि का तुम्हारा स्वामी याने मालिक है । || ३७ ||

बिन देही आकार || अलख खावंद सो कहिये ||
सो तेरे तन माय || भूल ओटे क्यूं जईयो || ३८ ||

वह बिना देह है उसे देह नही है,आकार नही है,अलख है । वह दिखाई नही देता है,खाविंद सभी का मालिक है । वह तुम्हारे शरीर मे ही है । उसे छोड़कर,भूलकर तुम दूसरी तरफ किसलिए जाते हो ? || ३८ ||

चलतां देवल पूज || पेम सूं प्रीत बंधावे ||
सूने घर सुखराम || पावणो क्या सुख पावे || ३९ ||

तो तुम चलता फिरता मंदिर याने संत को पूजो,उस संत से प्रेम से प्रिती बाँधो । सूना घर याने जहाँ सदेही संत नही ऐसे संतो के धाम,मंदिर,छत्री,चबूतरा ऐसे उजाड़ घर मे जाकर, पावणा याने जीव क्या सुख पायेगा ? || ३९ ||

धणी गया प्रदेस || जाग झाड़े नर नारी ||
बिन राजा रजपूत || जूंझ करे मरे बिचारी || ४० ||

धनी याने संत सतपुरूष तो परदेश को याने मोक्ष को चले गये,अब उनके पीछे कोई स्त्री–पुरूष उस जगह को झाड़ पोछ करेगा व संतो की नित्य गाथा गायेगा तो उसे मोक्ष नही मिलेगा । मोक्ष देनेवाले साधू तो मोक्ष चले गये । तो यह ऐसा ही है जैसे राजा नही रहा ऐसे राजाके बिना राजपूत जूझ कर मर गया,तो उसे जहाँगीरी कौन देगा इसका तुम बिचार करो । ||४०||

कण बिन जावे खेत || जीव ब्हो भाँत ऊड़ावे ||

पात फूल फळ नाय || बांग कूं नीर पिलावे || ४१ ||

खेत मे पेड को दाने तो आये नही और जाकर अनेक तरह से पंछी उड़ाता है । ऐसे खेतमे दाने कहाँ से मिलेंगे ऐसे ही संत सतपुरूष के बिना मोक्ष कहाँ से मिलेगा?जिसे ग्यान,ध्यान नही और विवेक नही ऐसे साधू को भोजन देकर उसकी सेवा करना यह जिसमे पत्ते,फूल-फल नही ऐसे बाग को पानी देने जैसा है । || ४१ ||

गाय भेंस को करक || ताय का जतन करीजे ||
पारी भर सुखराम || दुध कितरो यक लीजे || ४२ ||

वैसे ही कोई दूध देनेवाली अच्छी गाय या भैस थी,वह मर गयी । उसके मरने पर उसकी हड्डी यत्न करके रखी,तो वह हड्डी दूध से गुंड़ी भर देती है क्या?जैसे वह हड्डी दूध की गुंड़ी भर देती नही इसप्रकार सतपुरूष के मोक्ष में चले जाने पर उनके केश,नाखून,दात,दाढ़ी, कपड़े तथा अस्थी इनकी पूजा करने पर मोक्ष नही मिल संकता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || ४२ ||

बेळु खळ पिलाय || छांछ कूं खरी बिलोवे ||
बांझ नार कूं सेव || बस्त बिन मेल्यो जोवे || ४३ ||

रेत और खली(ढ़ेप)घाणी मे ड़ालकर पेरनेसे तेल नही निकलता है वैसे ही तीर्थ,व्रत व देवपूजा करने से कुछ भी नही मिलता है । छाछ को कितना भी मथे तो भी लोणी नही निकलता है,वैसे ही वेद को बहुत बार पढ़ा और उसमें से अर्थ खोजा तो भी मोक्ष नही मिलता । उसी तरहसे बांझ स्त्री याने जिसे जीव तारने का ओहदा नही,ऐसे साधू की सेवा करने से भवसागर तीरने का फल प्राप्ती नही होती । || ४३ ||

धन बिन मांडे खत || रूंख बिन फळा चडीजे ||
जाळ बिन कुवो जोड़ || कर्ण बिन हेला दीजे || ४४ ||

वस्तु रखी तो नही और वह वस्तु देख रहा है याने खोज रहा है,तो रखे बिना वहाँ वह वस्तु कैसे मिलेगी । पास मे रूपये तो नही और दूसरे के पास से दस्तावेज लिखा लेता है जिस वृक्ष पर फल नही,ऐसे वृक्ष पर चढ़कर फल खोजता है । ऐसे ही गिरनार,आबु,समेद शिखर, पादीगणा,मुक्तागिरी,सोनागिरी,पावापुर,शंत्रुजया जाना और वहाँ तिर्थकर नही है फिर भी तिर्थकरोंको खोजना यह है । बिना फल के वृक्षपर चढ़ने,बिना पानीवाले कुँए पर मोट जोतना और कान नही ऐसे बहरे को हाँक मारना यह गिरनार,आबु,समेद शिखर, पादीगणा,मुक्तागिरी,सोनागिरी,पावापुर,शंत्रुजया पर जाकर तिर्थकर खोजने सरीखा है । ||४४||

बादस्या हा बिन तक्त || सेव कोई पटा कडावे ||
सुर्गुण यूं सुखराम || मोख कबहू नही पावे || ४५ ||

जैसे बादशाह था वह तो रहा नही,उसके बाद मे उसका तख्त है तो उस तख्त की सेवा

करने से किसी को जहाँगीरी मिलेगी क्या?वैसे ही संत तो मोक्ष को चले गये वो संत यहाँ नही है परन्तु उनका पाट है । उस पाट की सेवा कर के मोक्ष का पट्टा किसी को मिलेगा क्या?वैसे ही सभी सगुण याने पगले,चरण,मूर्ती,तसबीर,फोटो,पादुका,घड़ी, ढोल्या, धुणी, खड़ावू ,गुदड़ी, चोला,घरड़ी,आस इनसे मोक्ष कभी भी नही मिलेगा,ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।।४५ ।।

ध्रम पुन्न जिग जाग ।। जप तिर्थ सब कीया ।।
ब्रत वास ऊपवास ।। चित्त प्रमारथ दीया ।। ४६ ।।

ऐसे ही धर्म,पुण्य,यज्ञ,योग,जप,तप,तीर्थ,सभी किये,व्रत–उपवास बहुत ही किये और परमार्थ करने पर चित्त दिया । ।। ४६ ।।

तपस्या करे करूर ।। सील सो जत्त कमावे ।।
प्रमार्थ के काज ।। जाय ब्हो जाग बिकावे ।। ४७ ।।

और बहुत घोर तपश्या की,शीलव्रत(ब्रम्हचर्य)रखकर जत्त कमाया और परमार्थ के लिए अनेको जगहो पर जाकर बिक गया तो ये सभी किए हुए कुछ भी व्यर्थ नही जायेंगे । इन सभी के फल मिलेंगे । ।। ४७ ।।

तीन लोक चवदा भवन ।। जा तहाँ अे फळ खाय ।।
जन सुखिया बिन नाव रे ।। मोख कबू नही जाय ।। ४८ ।।

इन सभी के तीनो लोक और चौदहो भुवनों मे,जहाँ–तहाँ जाकर इसके फल भोगेगा परन्तु आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि इनके फल तो भोगेंगे परन्तु नाम का भजन किए बिना मोक्ष मे कभी नही जायेगा । ।। ४८ ।।

दोहा ।।

नाव कहे सुखरामजी ।। केवळ ब्रम्ह विचार ।।
धरी देहे सब झूठ हे ।। माया को विस्तार ।। ४९ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि कैवल्य ब्रम्ह के नाम का विचार करो । और ये दूसरे जो जो देह धारण करके अवतार आये,वे–वे सभी ही अवतार झूठे है । ये देह धारण करके आते है वे सभी माया के विस्तार है । ।। ४९ ।।

धरी देहे सुणज्यो तुम सब ही ।। मे बिग्यान बताऊं ।।
क्रणी क्रम अेक नही साझूं ।। निज पद माँय समाऊं ।। ५० ।।

अब तुम सभी सुनो,मै भी देह धारण किया हूँ ,मै अपनी देह के योग से मै तुम्हे विज्ञान बताता हूँ । मै कुछ भी करनी नही करते और कर्म नही करते और एक भी साधना न करते हुए निजपद को जाकर मिल गया हूँ । ।। ५० ।।

सुर्ग नर्क दोनू सुख झूटा ।। जूवा खेल मंडाया ।।
जाय जीत ब्होता धन लेवे ।। कब सो गांठ गमाया ।। ५१ ।।

स्वर्ग के और नर्क के दोनो सुख झूठे हैं । यह जुवे के खेल के जैसा है । जीत गये तो बहुत सा धन आता है और हार जाने पर पास के सभी गँवा देता है । ।। ५१ ।।

बर्णा ब्रण क्हे जग माही ।। पिंडत करे बिचारा ।।
जन सुखराम बंध्या जम तांती ।। हे ईनसूं कोई न्यारा ।। ५२ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,की ये सभी चारो वर्ण के लोक यम के दावणी मे बांधे हुए हैं । यह सभी पंडीतो बिचार करो । यम की तांत याने दावणी से कोई एखादा संत निराला है इसका पंडीतो बिचार करो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज पंडीत को कह रहे है । ।। ५२ ।।

ब्रम्ह बेद दोनू जग ऊला ।। रिख जग सबे भुलाया ।।
दोनू पखाँ बिचे सब जूंझें ।। ब्रम्ह भेव नही पाया ।। ५३ ।।

ब्रम्ह और वेद इन दोनो से जगत इधर ही है ऐसा बताकर अठ्ठासी हजार ऋषीयों ने इस सारे संसार को भुला दिया । सतस्वरुप ब्रम्ह के भेद के लिये इन दोनो पक्षों के बीच सभी जूंझ रहे है परन्तु सतस्वरुप ब्रम्ह का भेद किसी को भी नही मिला । ।। ५३ ।।

ऋति कहे मून गहे साझे ।। जग हुन्नर सब लोई ।।
जेसे मंडया लाव लस्कर मे ।। सबे एक घर होई ।। ५४ ।।

कोई वेद की श्रुती कहता है तो कोई मौन साधते है,तो कोई जगत का हुन्नर करते हैं । जैसे एक घर मे ही चित्र बनाया हुआ रहता है जिसमे दोनो तरफ की फौजे एक ही घर मे होती हैं । ।। ५४ ।।

त्रिया पुर्ष भ्रम मिल दोनू ।। साच अेक नही आया ।।
जन सुखराम केण कूं दीया ।। जेड़ गुगरा साया ।। ५५ ।।

स्त्री और पुरूष दोनो मिलकर भ्रमीत हुए है,विश्वास एक को भी नही आया । वैसे ही आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि सोनार को गहना बनाने के लिए सोना दिये,उसके उसने जेवर(दागीना)व घागऱ्या वगैरे अलग अलग बनाये । ।। ५५ ।।

घडयो घाट गागरी माटो ।। न्याव कुलाल बणाया ।।
सब का नाँव ठाम सब सारा ।। यूं जग मोय लखाया ।। ५६ ।।

वैसे ही कुम्हारने गागर,रांजण वगैरे बर्तनों को बनाया व बर्तनों को नाम अलग अलग रखा, इसीतरह यह संसार मुझे दिखाई दिया । ।। ५६ ।।

सब ही नाव ठांव सब केणी ।। कारज सूं ले कीया ।।
समज्या पछे अेक है सांचो ।। जमी आद दै लिया ।। ५७ ।।

सभी बर्तनों के नाम वे बर्तन देखकर उस काम मे आयेंगे । उसके कार्य के प्रमाण से वो–वो नाम रखे परन्तु जब यह समझ मे आयेगा,की ये सभी मिट्टी के है मतलब पृथ्वी से बनाये गये है मतलब आदी मे पृथ्वी थी और अन्त में भी इन बर्तनों की पृथ्वी ही होगी

।)।। ५७ ।।

किया ज्हाँ मिल्या सब माही ।। आतर ढेल सरीसा ।।
घडीयाँ ज्हाँ किया तिण ऊपर ।। चडे पडे तां पीया ।। ५८ ।।

ये बर्तन आदी जिस पृथ्वी से बनाये गये थे,वे पुन: पृथ्वी मे जाकर मिल जायेंगे । ये काम के बर्तन और पृथ्वी से अलग हुआ मिट्टी का ढेला ये सरीखे ही है । जिस पृथ्वी पर बनाये गये,वे पृथ्वी के उपर चढ कर पृथ्वी से अलग होकर,पुन: फूट कर पृथ्वी मे मिल गये । ।। ५८ ।।

ज्यूं तर पात पान सब हुवा ।। डाळी डाळ कहाणी ।।
निश्चे जाय मिले धर माही ।। ज्हाँ ते बीज ऊपाणी ।। ५९ ।।

जैसे पेड़ हुये वे पृथ्वी से ही निकल कर हुए,उनकी डालियाँ ड़ाल,पत्ते,सब अलग अलग कहलाए । परन्तु ये सभी जमीन से ही निकले हुए है । वे निश्चय ही पुन: जमीन मे ही जाकर मिलेंगे । जहाँ से बीज उत्पन्न हुआ,वही जमीन में सभी जाकर मिल गये। ।।५९।।

क्रसो जाय करे जो खेती ।। माळ माळ कण कीया ।।
फूली फळी पाक ज्हाँ आई ।। भरी आण ज्हाँ लीया ।। ६० ।।

जैसे किसान खेती करता है और जंगल में एक–एक दाना अलग अलग ड़ाल आता है । वह खेती फूलकर फलेगी और फसल आयेगी वे पुन: जहाँ से बीज लिए थे वही के वही पुन: भर देगा । ।। ६० ।।

साहूकार बिणज सो कर हे ।। घर घर दाम बिखेरे ।।
जन सुखराम लिया ज्हाँ मेले ।। ब्याज समुळा घेरे ।। ६१ ।।

जैसे साहुकार वाणिज्य(देन–लेन)करता है और घर–घर रूपये बिखेर देता है । वही रूपये व्याज के साथ घर पर आने पर पहले जगह पर व्याज मूल के साथ पुन: रख देता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।६१ ।।

।। इति चाणक को अंग संपूरण ।।